उर्दू दैनिक तामीर के २५ वे साल में क़दम रखने पर एक और पेशकश

दैनिक भारत कि

तामीर

संपादक - काझी मकदूम शफीउद्दीन hinditameer@gmail.com

बीड (महाराष्ट्र) | वर्ष-१ ला | अंक-१७० वा | सोमवार २० जनवरी २०२५ | RNI TITLE CODE:MAHHIN11405/120/1/3/2024 | किमत : २ रूपये | पन्ने - ४

मुझे जानबूझकर निशाना बनाया जा रहा है, लेकिन मैं अभिमन्यु नहीं, अर्जुन हूं-धनंजय मुंडे

संतोष देशमुख के हत्यारों को फांसी दी जाए-मुंडे की मांग

परली और बीड़ जिले को बदनाम न करें-विपक्ष से मुंडे की अपील

कार्यकर्ताओं को सशक्त बनाते समय भरोसा जरूरी है, तभी पार्टी मजबूत होगी - शिर्डी में धनंजय मुंडे का आक्रामक भाषण

मुंबई, १९ जनवरी । जमीर काजी

जब से मैं राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी) में शामिल हुआ हूं, मैं अजीत दादा के हर फैसले में मजबूती से उनके साथ खड़ा हूं। पार्टी के बुरे वक्त में, जब पूरा महाराष्ट्र विभिन्न प्रदर्शनों और आंदोलनों की लहर में था, मैं पार्टी के लिए संघर्ष करता रहा। लेकिन अब मुझे जानबूझकर बीड़ जिले के एक हत्या मामले में निशाना बनाया जा रहा है। सबसे ज्यादा दुख इस बात का है कि मुझे महाविकास अघाड़ी के नेता ही निशाना बना रहे हैं। कुछ पार्टी के लोग दादा को गलत जानकारी देकर गुमराह करने की कोशिश कर रहे हैं। हालांकि, मेरे चरित्र और सच्चाई से अवगत होने के कारण, अजीत दादा इस मुश्किल समय में भी मेरे साथ खड़े हैं।

चाहे कोई मुझ पर कितने भी झूठे आरोप लगाए, मुझे 'अभिमन्यु' बनाने की कोशिश करे, इससे कोई फर्क नहीं पड़ेगा, क्योंकि मैं 'अभिमन्यु' नहीं, 'अर्जुन' हूं। यह बात महाराष्ट्र के मंत्री धनंजय मुंडे ने शिर्डी में राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के नव संकल्प सम्मेलन में कही।

उन्होंने कहा कि दिसंबर में बीड़ जिले में संतोष देशमुख की हत्या एक बेहद दुखद घटना थी। पहले दिन से मेरी स्पष्ट राय है कि संतोष देशमुख के हत्यारों को फांसी दी जानी चाहिए। अपराध एक घिनौनी मानसिकता है, इसका कोई जाति या धर्म नहीं होता। लेकिन इस घटना के बहाने एक खास समुदाय को जाति के आधार पर अपराधी ठहराने की कोशिश हो रही है।

मुंडे ने अजीत दादा को संबोधित करते हुए कहा कि जब से आपने महायुति में शामिल होने का फैसला किया है, हम आपके हर कदम पर आपके साथ खड़े हैं। कई बार दादा को विलेन के रूप में पेश करने की कोशिश की गई। लेकिन २०१४ से २०१९ तक विपक्ष का नेतृत्व करते हुए और पार्टी के पतन के समय में भी उन्होंने पार्टी को मजबूती दी।

धनंजय मुंडे ने कहा कि सामाजिक न्याय मंत्री के रूप में मैंने कई अच्छे काम किए, जैसे कि गांवों और बस्तियों के जाति-आधारित नामों को बदलना और गन्ना मजदूर कल्याण निगम की स्थापना। अब मैं कृषि मंत्री हूं और मैंने एक साल में फसल बीमा के तहत ११,००० करोड़ रुपये हासिल किए हैं, लेकिन इस पर भी आलोचना हुई। हालांकि, जो लोग मुझे बदनाम करते हैं, वे इन उपलब्धियों पर बात नहीं करते।

उन्होंने कहा, लोकसभा चुनाव के दौरान मैंने पार्टी के कई उम्मीदवारों के लिए प्रचार किया। उस समय मुझे सलाह दी गई कि मैं बारामती में सुनीत्रा पवार के लिए प्रचार न करूं, क्योंकि इससे भविष्य में मेरे लिए परेशानी हो सकती है। लेकिन मैंने पार्टी के हित में बारामती में प्रचार किया। विधानसभा चुनाव के दौरान मुझे जानबूझकर निशाना बनाया गया। लेकिन परली की जनता के समर्थन से मैं १,४०,००० वोटों के बड़े अंतर से जीता, जो कुछ लोगों को रास नहीं आया।

उन्होंने आरोप लगाया कि थाणे में पार्टी उम्मीदवार के प्रचार के लिए जाने के कारण वहां के नेता बीड़ आकर उन्हें निशाना बना रहे हैं। उन्होंने यह भी कहा कि विधानसभा चुनाव के दौरान उन्होंने केवल ५ दिन परली में रहकर बाकी समय पार्टी के अन्य उम्मीदवारों के लिए रैलियां और सभाएं कीं। अधिकांश उम्मीदवार विजयी हुए, जो पार्टी के लिए एक बड़ी उपलब्धि है।

धनंजय मुंडे ने कहा, मैं एक कार्यकर्ता हूं और लगातार काम करता हूं। मैं केवल नाम का नेता नहीं हूं। मेरे भीतर का कार्यकर्ता कभी नहीं मरेगा। अगर पार्टी नेतृत्व मुझे पांडिचेरी जाकर पार्टी के विस्तार के लिए काम करने को कहे, तो मैं वहां जाकर भी काम करूंगा। पार्टी को कार्यकर्ताओं पर आधारित बनना होगा। कार्यकर्ता को सशक्त बनाते समय उस पर भरोसा करना भी जरूरी है, तभी पार्टी मजबूत होगी।

उन्होंने भरोसा जताया कि आगामी स्थानीय निकाय चुनावों में पार्टी कार्यकर्ताओं की कोई कमी नहीं होगी।

सैयद नजीब मौलान का इंतेकाल जनाजा नमाज में हजारों कि उपस्थिति।

बीड़ (प्रतिनिधि)

बीड़ जिले की तबलीगी जमात के अमीर (प्रमुख) सैयद नजीब मौलाना का शनिवार, १८ जनवरी २०२५ को रात ९:३० बजे अल्प बीमारी के बाद दुखद निधन हो गया। वे ७५ वर्ष के थे। उनके परिवार में पत्नी, एक बेटा और एक बेटी हैं।

आज, रविवार सुबह ११:३० बजे बिंदुसरा नदी के पास स्थित इज्तेमा मैदान में उनकी जनाजा नमाज अदा की गई। इस अवसर पर महाराष्ट्र राज्य तबलीगी जमात के प्रमुख (अमीर साहब) हाफिज मंज़ूर साहब, मौलाना महमूद साहब, मौलाना लईक साहब, मौलाना रईस साहब समेत राज्यभर के आलिम, मुफ्ती, मौलाना और जिले के मुस्लिम समाज के लोग हजारों कि संख्या में उपस्थित थे। नमाज अदा करने के बाद उनकी दफन विधी मासूम कॉलोनी, मोमिनपुरा के कब्रिस्तान में अमल में आयी ।

सैयद नजीब साहब का जनाजा मरकज मस्जिद, राजुरी वेस से निकाला गया। जनाजा राजुरी वेस, बशीर गंज चौक, पुराने एसपी ऑफिस के सामने का रोड, खासबाग रोड होते हुए इज्तेमा मैदान पहुंचा। जनाजे में जिलेभर से आए मुस्लिम समाज के लोगों ने भाग लेकर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की।

सैयद नजीब साहब बीड़ शहर के कारंजा इलाके के निवासी थे। वे कुछ समय से बीमार चल रहे थे और काकू नना अस्पताल में उनका इलाज चल रहा था। उनके निधन से मुस्लिम समाज में शोक की लहर दौड़ गई है। दैनिक तामीर परिवार उनके दुख में सहभागी है।

घोडका राजुरी की दुखद घटना अत्यंत हृदयविदारक-विधायक संदीप क्षीरसागर

मृत युवकों के परिवारों को १० लाख रुपये की आर्थिक सहायता घोषित

बीड़, १९ (प्रतिनिधि): बीड़ तहसील के घोडका राजुरी गांव में पुलिस भर्ती की तैयारी कर रहे तीन युवकों की एस.टी. बस से कुचलकर हुई मौत की दुर्भाग्यपूर्ण घटना अत्यंत दुखद है। विधायक संदीप क्षीरसागर ने इस घटना पर गहरा दुःख व्यक्त किया है। उन्होंने कहा कि ये सभी युवक सामान्य परिवार से और बेहद गरीब पृष्ठभूमि के थे, इसलिए सरकार से उनके परिवारों को सहायता प्रदान की जानी चाहिए। इस मांग को घोडका राजुरी के ग्रामीणों, मृतकों के परिजनों और विधानसभा क्षेत्र की ओर से विधायक संदीप क्षीरसागर ने परिवहन मंत्री प्रताप सरनाईक के सामने रखा। इसके बाद मंत्री ने मृतकों के परिवारों को १०-१० लाख रुपये की आर्थिक सहायता देने की घोषणा की।

घटना ५ जनवरी, रविवार की सुबह हुई, जब घोडका राजुरी गांव के ५ युवक पुलिस भर्ती की तैयारी के लिए अभ्यास कर रहे थे। उसी समय बीड़ से परभणी की ओर जा रही एस.टी. बस ने व्यायाम कर रहे युवकों को कुचल दिया। उनमें से २ युवकों ने कूदकर अपनी जान बचाई, लेकिन ३ युवक - सुबोध बाबासाहेब मोरे (२० वर्ष), विराट बबरुवान घोडके (१९ वर्ष), और ओम सुग्रीव घोडके (२० वर्ष) - घटनास्थल पर ही मारे गए। पुलिस में भर्ती होने का सपना देखने वाले ये युवक बेहद सामान्य और गरीब परिवारों से थे।

घोडका राजुरी के ग्रामीणों और मृतकों के परिजनों ने मांग की थी कि मृतकों के परिवारों को आर्थिक सहायता दी जाए और परिवार के एक सदस्य को सरकारी नौकरी में समायोजित किया जाए। विधायक संदीप क्षीरसागर ने परिवहन मंत्री प्रताप सरनाईक को इस घटना की जानकारी दी और मृतकों के परिवारों को सहायता प्रदान करने की मांग की। मंत्री ने इस पर तुरंत कार्रवाई करते हुए प्रत्येक परिवार को १० लाख रुपये की आर्थिक सहायता देने की घोषणा की।

विधायक संदीप क्षीरसागर ने कहा, एक विधायक होने के नाते मैं इन परिवारों के दुःख में पूरी तरह शामिल हूं। मैं इन परिवारों का सदस्य बनकर उनके सुख-दुख में हमेशा साथ रहूंगा। सरकार द्वारा घोषित सहायता इन परिवारों तक पहुंचाने के लिए मैं लगातार प्रयास करूंगा। इसके साथ ही, ग्रामीणों और परिजनों की मांग के अनुसार, परिवार के एक सदस्य को सरकारी नौकरी देने के लिए भी सरकार से अनुरोध करूंगा।

विधायक ने आश्वासन दिया कि इस दुखद घटना के बाद पीड़ित परिवारों की हर संभव मदद की जाएगी।

बीड के केज की बेटी का कारनामा; भारत ने जीता महिला खो-खो वर्ल्ड कप

दिल्ली, १९ जनवरी (एजेंसी):

खो-खो वर्ल्ड कप २०२५ में भारतीय महिला टीम ने नेपाल को ७८-४० से हराकर पहली बार विश्व चैंपियन का खिताब अपने नाम किया। शुरुआत से ही भारतीय बेटियों ने शानदार प्रदर्शन करते हुए किसी भी टीम को वापसी का मौका नहीं दिया। फाइनल मैच में भी नेपाल ने भारत के सामने पूरी तरह से घुटने टेक दिए और भारत ने खिताब जीत लिया।

बीड जिले के केज तालुका की बेटी प्रियंका इंगले के नेतृत्व में भारतीय टीम ने यह इतिहास रच दिया। मूल रूप से बीड की रहने वाली और वर्तमान में पुणे के पिंपरी-चिंचवड़ में रहने वाली प्रियंका इंगले ने दोनों जिलों का गौरव बढ़ाया है।

खोलो आंखें, देखो ठीक,ऐसी भी नेकनामी कि रसीद्।

यह खो-खो वर्ल्ड कप पहली बार आयोजित किया गया और भारत ने पहली ही बार में यह खिताब जीत लिया। फाइनल में भारतीय खिलाड़ियों ने अद्भुत खेल दिखाते हुए नेपाल को बड़े अंतर से हराया। पहले ही टर्न से भारतीय महिला खिलाड़ियों ने मैच पर अपना दबदबा बनाना शुरू कर दिया। उन्होंने पहले ही टर्न में आक्रामक खेल दिखाते हुए नेपाल के बचाव को कमजोर कर दिया और ३४-० की बढ़त बना ली।

प्रियंका इंगले के नेतृत्व में भारतीय टीम ने नेपाल को वापसी का कोई मौका नहीं दिया। दूसरे टर्न में जब नेपाल की टीम को आक्रमण का मौका मिला, तो वे बढ़त हासिल करने में असफल रहे और केवल अंतर को कम कर सके। दूसरे टर्न के बाद स्कोर ३५-२४ हो गया।

दूसरे टर्न में भारतीय डिफेंडरों ने शानदार बचाव करते हुए नेपाल के आक्रमण को विफल कर दिया और १ अतिरिक्त अंक अर्जित किया। इस टर्न में भारत ने ड्रीम रन से १ अंक लिया, जबकि नेपाल ने २२ अंक हासिल किए।

तीसरे टर्न में भारतीय खिलाड़ियों ने फिर से कमाल किया और ३८ अंक जुटाए। इस दौरान नेपाल की टीम डिफेंस में एक भी अंक नहीं बना सकी। चौथे और अंतिम टर्न में भारतीय महिला टीम ने नेपाल के आक्रमण को दबाते हुए शानदार डिफेंस किया।आखिरकार, भारतीय टीम ने ७८-४० के बड़े अंतर से मैच जीत लिया और पहली बार खो-खो वर्ल्ड कप का खिताब अपने नाम किया। इस जीत के साथ भारतीय महिला टीम ने इतिहास रच दिया। बीड को बदनाम करने वाले बुम अब इधर भी जाए घूम इस तरह कि प्रतिक्रिया भी सामने आ रही है।

मलकापुर के ऐतिहासिक दरवाजों की मरम्मत पर धार्मिक रंग देने की कोशिश

(ज़फर खान)

मलकापुर: मलकापुर नगर के ऐतिहासिक दरवाजों की जर्जर हालत को देखते हुए उनकी मरम्मत और पुनर्निर्माण का कार्य किया गया। ये दरवाजे नगर की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पहचान हैं, जो समय के साथ जीर्ण-शीर्ण हो चुके थे। नागरिकों की लंबे समय से चली आ रही मांग पर प्रशासन ने इनकी मरम्मत की पहल की।

दरवाजों की हालत इतनी खराब हो गई थी कि वे कभी भी गिर सकते थे, जिससे बड़ी दुर्घटना का खतरा था। इसके मद्देनजर नगर की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक धरोहर को बचाने के लिए मरम्मत का काम किया गया। लेकिन कुछ असामाजिक तत्व इसे मिनी पाकिस्तान का निर्माण बताकर लोगों को भड़काने की कोशिश कर रहे हैं।

ऐतिहासिक दरवाजों की मरम्मत को लेकर यह झूठ फैलाया जा रहा है कि यह काम धार्मिक उद्देश्य से किया गया है। जबकि मरम्मत का उद्देश्य केवल क्षेत्र की धरोहर को संरक्षित करना है। इस तरह की अफवाहें न केवल मरम्मत कार्य को बाधित कर रही हैं बल्कि नगर के शांतिपूर्ण माहौल को भी नुकसान पहुंचा रही हैं।

हालांकि, इस मरम्मत कार्य को लेकर विवाद खड़ा किया जा रहा है और इसे धार्मिक रंग देने की कोशिश की जा रही है। कुछ तत्व इसे 'धार्मिक साजिश' करार देकर लोगों में भ्रम पैदा कर रहे हैं। लेकिन सच्चाई यह है कि यह कार्य पूरी तरह से ऐतिहासिक धरोहर को संरक्षित करने और उसकी पुरानी गरिमा को बहाल करने के लिए किया गया है।

मरम्मत के दौरान इस बात का विशेष ध्यान रखा गया कि दरवाजों की मूल संरचना और ऐतिहासिकता को बनाए रखा जाए। यह कार्य क्षेत्र के विकास और सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण के लिए उठाया गया एक सकारात्मक कदम है।

नगर के जागरूक नागरिकों ने इस विवाद को बेबुनियाद बताते हुए अपील की है कि ऐसे मुद्दों पर राजनीति और धर्म का उपयोग न किया जाए। प्रशासन ने भी स्पष्ट किया है कि उनका उद्देश्य केवल ऐतिहासिक दरवाजों की मरम्मत और उनकी सुरक्षा सुनिश्चित करना है।

यह जरूरी है कि समाज के सभी वर्ग इन धरोहरों की रक्षा के लिए एकजुट होकर कार्य करें और विकास के कार्यों को प्रोत्साहन दें।

२८वीं इंटर स्कूल ड्रामा प्रतियोगिता आलिया जबीन ख़ान ट्रॉफी १६ जनवरी को भारतरत्न भीमसेन जोशी कलामंदिर, पुणे में संपन्न हुई।

आईडिया मुंबई पूरे देश में नाटक संबंधी गतिविधियां चलाता है। खऊ- की सीरीज 'आदब मैं प्रेमचंद हूं' दो वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में भी दर्ज है। शिक्षा के क्षेत्र में यह हर साल बच्चों के लिए इंटर स्कूल ड्रामा प्रतियोगिता का भी आयोजन करता है, जो देश की सबसे पुरानी प्रतियोगिता है। २८वीं इंटर स्कूल ड्रामा प्रतियोगिता १६ जनवरी को सुबह १० बजे से पंडित भीमसेन जोशी कला मंदिर (औंध) में पूरे दिन जारी रही। इस साल इस प्रतियोगिता में मराठी भाषा को भी शामिल किया गया है।प्रतियोगिता में मोनो एक्टिंग, मिमिक्री और फैंसी ड्रेस प्रतियोगिताएं भी हुई। प्रवेश निःशुल्क था। नाटक के लिए किसी भी स्कूल द्वारा कोई प्रवेश शुल्क नहीं लिया गया था। इस प्रतियोगिता का उद्देश्य शिक्षा में नाटक के महत्व को समझना और बच्चों में आत्मविश्वास कैसे पैदा किया जाए उसपर महनत की जाने की आवश्यकता है। इस प्रतियोगिता में पुणे और उपनगरों के ८ स्कूल ने भाग लिया। तीन प्रतिष्ठित व्यक्तियों श्री अच्युत गोडबोले, श्रीमती शुभांगी दामले और श्री प्रशांत पी खेडकर को 'रवीन्द्रनाथ टैगोर ट्रॉफी' से सम्मानित किया गया। सर्वश्रेष्ठ नाटक में सब से ऊपर मराठी नाटक गानारा मुलुक रहा जो एडवोकेट बापू साहेब बोंडे हाई स्कूल (लोनावाला) ने प्रस्तुत किया था। बेस्ट एक्टर अमजद ख़ान ट्रॉफी इसी नाटक के यशराज खर्त को दिया गया। और बेस्ट एक्ट्रेस का स्मिता पाटिल अवार्ड ख़ान किनाज़, नोबल इंग्लश स्कूल ने प्राप्त किया। सर्वश्रेष्ठ लेखक आगा हशर कश्मीरी अवार्ड झऊ-ी इंग्लिश मीडियम सेकेंडरी स्कूल की लेखिका सुनीता रसकर और

ज्योति बोंदरे को दिया गया। सर्वश्रेष्ठ निर्देशक का इनाम राज कपूर ट्रॉफी से सम्मानित हुवे डॉक्टर संजय पुजारी। प्रेक्षकों में तेजस पारेख, अपेक्षा देशमुख और अकील अल्वी थे। शाम ४ बजे हिंदी नाटक मैं लोकमान्य तिलक हूँ और स्वराज्य लेकर रहूँ गा का मंचन टीम खऊ- ने किया जिसे दर्शकों ने बहुत पसंद किया।दिनकर स्मृति न्यास के चेयरमैन श्री नीरज कुमार जी के हाथों रबीन्द्रनाथ टैगोर ट्रॉफी गणमान्य व्यक्तियों को भेंट दी गई। इस प्रतियोगिता में १०० से अधिक विद्यार्थियों ने भाग लिया था। रिजल्ट आइडिया के अध्यक्ष श्री मुजीब ख़ान ने घोषित किया।

बीड़ जिले के तबलीगी जमात के प्रमुख मौलाना सैयद नजीब साहब (अमीर साहब) का निधन हो गया। आज पूर्व मंत्री जयदत्त क्षीरसागर ने उनके निवास स्थान पर जाकर उनके परिवार से मुलाकात की।

मिलिया सीनियर कॉलेज, बीड़ के NEP सेल और NSS यूनिट के तत्वावधान में बुक रिव्यू कार्यक्रम का सफल आयोजन

बीड़ (प्रेस विज्ञप्ति)

हाल ही में मलिया कॉलेज कैंपस में पुस्तक समीक्षा और कठिन स्पर्धा अर्थात बुक रिव्यू कार्यक्रम का भव्य आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. शेख रफीक ने की, जबकि संयोजन डॉ. काज़ी अर्शिया जबीन काज़ी मखदूम ने किया।

कार्यक्रम में डॉ. सैयद फरीद अहमद नहरी ने कार्यक्रम के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए छात्रों को यह बताया कि पुस्तक को कैसे पढ़ना चाहिए और उस पर समीक्षा कैसे लिखनी चाहिए। उन्होंने कहा कि अध्ययन के बिना किसी भी क्षेत्र में सफलता प्राप्त करना असंभव है। खासकर यदि कोई छात्र प्रतिस्पर्धात्मक दौड़ में खुद को साबित करना चाहता है, तो उसे अध्ययन की आदत डालनी चाहिए। उन्होंने यह भी बताया कि अध्ययन

से व्यक्ति का मस्तिष्क सोचने-समझने के लिए प्रशिक्षित हो जाता है और राष्ट्रीय शिक्षा नीति के महत्व को भी उजागर किया।

डॉ. एजाज़ परवीन, छडड कार्यक्रम अधिकारी, ने बुक रिव्यू की महत्ता और उपयोगिता पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ. शेख रफीक ने अपने संबोधन में कहा कि आज के प्रगतिशील युग में, जहां समाज मोबाइल संस्कृति को अपना रहा है और किताबों से सीधा संबंध कम हो रहा है, ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन बेहद आवश्यक है। ये कार्यक्रम सरकार के निर्देशानुसार छात्रों में पढ़ने और उस पर विचार-विमर्श करने की प्रवृत्ति को बढ़ावा देने के लिए आयोजित किए जा रहे हैं।

इस कार्यक्रम के लिए छात्रों को विभिन्न विषयों पर आधारित पुस्तकें दी गईं और उन पर समीक्षा लिखने के लिए पन्ने भी प्रदान किए गए। छात्रों ने मंच पर आकर अपने लिखित समीक्षा प्रस्तुत की, जो उनके अध्ययन और मेहनत का परिणाम थी। इस कार्यक्रम के तहत २६ जनवरी २०२५ को गणतंत्र दिवस समारोह में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले छात्रों को प्रथम, द्वितीय, तृतीय पुरस्कार और एक प्रोत्साहन पुरस्कार दिया जाएगा।

कार्यक्रम के अंत में, संयोजक के धन्यवाद ज्ञापन के साथ यह आयोजन संपन्न हुआ। इस कार्यक्रम में प्रोफेसर मिर्ज़ा असद बेग, प्रोफेसर सैयद फरीद अहमद नहरी, प्रोफेसर अब्दुस समद नदवी, डॉ. शेख रफीक, डॉ. एजाज़ परवीन और डॉ. काज़ी अर्शिया जबीन काज़ी मखदूम उपस्थित थे। कॉलेज स्तर की समिति पंद्रह दिवसीय वाचन संकल्प महाराष्ट्रचा ने अल्लाह की रहमत, प्रिंसिपल डॉ. मोहम्मद इलियास फाजिल की मार्गदर्शक रुचि और देखरेख के तहत इस आयोजन को भव्य सफलता दिलाई।

लोकप्रिय पत्रकार काज़ी अमान- निर्भीक पत्रकारिता का आदर्श...!

शब्दों को हथियार बनाने की ताकत उनकी खबरों में होती है। यह कई बार देखा गया है। पूरी तन्मयता से खबर को आकार देते-देते ३५ साल गुजर गए। जब वे पीछे मुड़कर देखते हैं, तो उन्हें खुद इस पर आश्चर्य होता है। मुद्रित माध्यम से लेकर आज के रंग-बिरंगे इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के साथ तालमेल बिठाते हुए उनके इस सफर की सराहना करनी होगी। इन ३५ वर्षों में कई उतार-चढ़ाव आए, मुश्किलें और चुनौतियाँ भी रहीं। लेकिन सीनियर पत्रकार काज़ी अमान ने हमेशा समाज के हित को ध्यान में रखते हुए पत्रकारिता की है। यह कटु सत्य कोई नकार नहीं सकता। उन्होंने हमेशा वंचित और उपेक्षित वर्ग को ताकत देते हुए पत्रकारिता धर्म का पालन किया। एक तरह से वे क्रांतिकारी पत्रकार हैं। ऐसा कहना उनकी खबरों के साथ न्याय करना होगा। हाल ही में उन्हें उत्कृष्ट पत्रकारिता का पुरस्कार प्रदान किया गया है। इस अवसर पर वरिष्ठ पत्रकार, हमारे मार्गदर्शक और बेबाक विचार रखने वाले सहयोगी मित्र काज़ी अमान के ३५ वर्षों की पत्रकारिता को सलाम करते हुए उनके योगदान का आकलन किया गया है।

कई ऐसे लोग हमारे आसपास होते हैं जिनके बारे में लिखने और बोलने का मन करता है। लेकिन कभी समय नहीं मिलता और कभी सही वक्त आने पर यह काम हो जाता है। इसे ही शायद ईश्वर की मर्जी कहते हैं। वरिष्ठ पत्रकार के रूप में अमानजी के जीवन में स्थान मिला। उनके साथ बिताया समय, मार्गदर्शन और उनकी सीखने वाली बातें सुनने को मिलीं। वे स्वभाव से बेहद सरल और बड़े भाई जैसे हैं। ऐसा लगता है कि उनके चरणों में झुककर उनसे आशीर्वाद माँगा जाए और वे उसे दिल से दे दें। ऐसा उनका स्वभाव है।

सन् १९८३ में वे बहुत कम उम्र में पत्रकारिता में आए। उनके पिता वरिष्ठ पत्रकार काज़ी हयातुल्लाह के पेशे को आगे बढ़ाने का उन्होंने निर्णय लिया। दरअसल, उनके पास शिक्षक बनने का मौका था, लेकिन उन्होंने खबरों के माध्यम से उपेक्षित समाज का शिक्षक बनने का निर्णय लिया। उन्हें दैनिक झुंजार नेता जैसे प्रतिष्ठित समाचार पत्र में काम करने का अवसर मिला। इस अवसर का उन्होंने भरपूर उपयोग किया। मराठी और उर्दू समाचार पत्रों में उनकी सक्रियता रही।

३५ वर्षों से वे मुद्रित माध्यमों से जुड़े हैं। उस समय इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का प्रभाव अधिक नहीं था। रिपोर्टर्स की संख्या भी कम थी, इसलिए समाचार पत्रों का एक अलग महत्व था। लिखने वाले रिपोर्टर और पत्रकार समाज में सम्मानित माने जाते थे। इस लिहाज से काज़ी अमान के लेखन ने बीड़ जिले के गेवराई इलाके के कई विषयों को झुंजार नेता के पन्नों पर लाया। सामाजिक, सांस्कृतिक, और राजनीतिक खबरों के अलावा विशेष रिपोर्ट और प्रतिष्ठित व्यक्तियों के साक्षात्कार ने उन्हें व्यापक पहचान दिलाई।

उनकी सबसे खास बात है उनका सप्रेम आदाब। इस शैली से उन्होंने पाठकों को अपना दीवाना बनाया। पत्रकारिता के इतिहास में काज़ी अमान और स्वर्गीय संतोष भोसले की पत्रकारिता का उल्लेख करना अनिवार्य है। राम-रहीम की जोड़ी के रूप में उनकी पहचान थी। पत्रकारिता की यह जोड़ी स्वर्गीय गोपीनाथ मुंडे के सीधे संपर्क में थी। स्वयं मुंडे साहब उन्हें नाम से पहचानते थे। भोसले दैनिक सामना के पत्रकार थे और काज़ी अमान दैनिक झुंजार नेता के संवाददाता। इस जोड़ी की पत्रकारिता पर कई लोग रश्क करते थे।

काज़ी अमान ने खबरों में कभी भी अंग्रेज़ी शब्दों का उपयोग नहीं किया। उन्होंने हमेशा मराठी भाषा को प्राथमिकता दी। उनका यह कदम महान कवि सुरेश भट की याद दिलाता है, जिन्होंने कहा था, साय मैं खाता हूँ, मराठी के दूध की, मैं किसी का उंबरा झिजवाने क्यों जाऊँ?

काज़ी अमान परिवर्तनवादी विचारधारा के पत्रकार हैं। उन्होंने राजनीतिक आंदोलनों में भी अपनी भूमिका निभाई। बिना किसी अपेक्षा के, केवल कर्तव्य के रूप में अपना काम किया। उनका स्वभाव है कि वे किसी विषय पर दिल से व्यक्त होते हैं और अपने समर्थन से साथ देते हैं।

गेवराई विधानसभा क्षेत्र में सामाजिक, राजनीतिक, और सांस्कृतिक मंच से जुड़ा हर कार्यकर्ता उन्हें नाम से पहचानता है। समर्थ रामदास स्वामी ने हमेशा सतर्कता बनाए रखने की बात कही थी। इस संदर्भ में खबरों में सतर्कता उनका गुण कहा जा सकता है। खबर लिखते समय वे गलतियों से बचने के लिए हमेशा सतर्क रहते हैं।

काज़ी अमान का जनसंपर्क बहुत मजबूत है। किसी भी क्षेत्र के व्यक्ति से मिलते समय उनका नंबर और पता पूछने की उनकी आदत है। उन्होंने समाज के निचले तबके को सजग किया और लेखनी के माध्यम से सुख-दुख साझा करने का प्रयास किया।

श्रीमंतों की नाक पर टिका साइकिल रिक्शा वाला बुझा रहा है प्यासे की प्यास, इस विशेष रिपोर्ट के लिए काज़ी अमान को दैनिक झुंजार नेता का उत्कृष्ट वार्ता पुरस्कार मिला। उन्होंने इसे संतोष और कृतज्ञता के साथ स्वीकार करते हुए कहा, मैंने समाज की सेवा करने का भरसक प्रयास किया है। मुझे सभी वर्गों का आशीर्वाद मिला है। मैं हमेशा उनका ऋणी रहूँगा।

सुभाष सुतार
पत्रकार, बीड़

आज उनके ३५ वर्षों के कार्य को विशेष पुरस्कार देकर सम्मानित किया जा रहा है। सचमुच, पुरस्कार नई ऊर्जा देते हैं। वरिष्ठ कवि विंदा करंदीकर की पंक्तियाँ उनके जीवन पर सटीक बैठती हैं:

ऐसे जियो दुनिया में,
आह्वान का इत्र लगाकर,
नजर टिकाकर नजरों में,
जीवन को दो उत्तर!

दैनिक भारत की तामीर अखबार के मालिक, मुद्रक, प्रकाशक, संपादक काजी मखदूम शफीउद्दीन ने आरएम प्रिंटरर्स, बार्शी रोड, बीड 431122 महाराष्ट्र में मुद्रित कर के दैनिक तामीर, नगर परिषद परिसर, बशीर गंज, बीड, महाराष्ट्र कार्यालय से प्रकाशित किया है। मोबाइल : 9270574444 ईमेल : hinditameer@gmail.com वेबसाइट : www.dailytameer.com

daily Bharat ki tameer newspaper owner printer publisher editor Quazi makhdoom shafiuddin has printed at RM printers barshi road beed 431122 Maharashtra at published at office daily tameer nagar parishad complex Bashir gunj beed Maharashtra. Mobile : 9270574444 Email : hinditameer@gmail.com Website : www.dailytameer.com